मराठी दैनिक
विश्वेश्वर
पुणे, शुक्रवार, दि. १० जुलै २०२६

फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट १२ जुलाई को 'मौली-एक कलातीत परंपरा' भरतनाट्यम प्रोग्राम पेश करेगा

पुणे : 'मौली-एक कलातीत परंपरा' भक्ति, परंपरा, कला और भगवान के बीच हमेशा रहने वाले कनेक्शन का जश्न है। पुणे के लोग इस कला को अनुभव कर पाएंगे जो पंढरपुर वारी की भावना को दुनिया भर में मशहूर भरतनाट्यम आर्टिस्ट, कोरियोग्राफर और रिसर्चर कलाईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर के भरतनाट्यम प्रोग्राम के ज़रिए ज़िंदा करती है। यह प्रोग्राम रविवार, १२ जुलाई को शाम ५ से ६.१५ बजे तक कोथरुड, मयूर कॉलोनी में MES ऑडिटोरियम में होगा। राज्य के हायर और टेक्निकल एजुकेशन मिनिस्टर चंद्रकांत पाटिल चीफ गेस्ट होंगे।

यह जानकारी फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट के फाउंडर और प्रेसिडेंट डॉ. केतन देशपांडे ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। इस मौके पर इंटरनेशनल लेवल पर मशहूर डांसर, भरतनाट्यम आर्टिस्ट, कोरियोग्राफर और रिसर्चर कलाईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर, फ्युएल डिपार्टमेंट हेड प्रो. प्राची अहिराव और मिस्टर चंद्रशेखर मौजूद थे। डॉ. केतन देशपांडे ने कहा, यह प्रोग्राम फ्यूल एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन की १० लड़कियों की पढ़ाई में मदद करने के लिए किया गया है, जो CSR के ज़रिए मुफ़्त शिक्षा देता है। बाला देवी चंद्रशेखर पहली डांसर हैं जिन्होंने संतों के अभंगों के पदों को आसानी से मिलाकर पूरे वारकरी समुदाय की यात्रा को मंच पर फिर से बनाया है। वारकरी परंपरा के अभंगों और दार्शनिक आवाज़ों से प्रेरणा लेते हुए, वह हर भक्ति गीत को एक जीवंत, लगातार चलने वाली यात्रा में बदल देती हैं। यह वारकरी के आध्यात्मिक, भावनात्मक और सामूहिक अनुभव का प्रतिबिंब है।

इस मील के पत्थर की रचना में मंच खुद एक पवित्र रास्ता है। यहाँ, पंढरपु की अटूट भक्ति की भावना कविता, दर्शन और नृत्य के एक साथ आने से दिखाई देती है। बाला देवी चंद्रशेखर ने ४० से ज़्यादा देशों में ३०० से ज़्यादा ग्लोबल स्टेज पर भारतीय क्लासिकल डांस किया है। कलाईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर ने कहा, मौली-ए टाइमलेस ट्रेडिशन का कॉन्सेप्ट पंढरपुर के पवित्र वारी से प्रेरणा लेता है। वारी कोई तीर्थयात्रा नहीं बल्कि अंदर की यात्रा है। मौली में, यह यात्रा एक बदलाव के रूप में खत्म होती दिखती है। संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और जनाबाई जैसे वारकरी संतों के जीवन और उनके अभंगों को भरतनाट्यम के ज़रिए दिखाया जाएगा। जहाँ भक्त न सिर्फ़ भगवान के दर्शन करके लौटता है, बल्कि उस दिव्य तत्व को अपने दिल में भी संजोता है। पंढरपुर वारी की भावना को जीवंत करता है।

इस प्रोग्राम में संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ महाराज के अलग-अलग अभंग और भारूदास शामिल हैं। मुख्य रूप से, उदंड पहले उदंड ऐकिले, सुंदर ते ध्यान, रूप कथे लोचनी, खेल मांडियेला वलवंती घई और काशी जा मी वृंदावन, मुरली वाजितो कान्हा शामिल हैं।

डॉ. केतन देशपांडे ने इस इवेंट का हिस्सा बनने की अपील की, जो भक्ति, परंपरा और कला और भगवान के बीच हमेशा रहने वाले कनेक्शन का जश्न मनाता है। उन्होंने ज़्यादा से ज़्यादा पुणेकरों से भरतनाट्यम प्रोग्राम का फ़ायदा उठाने की भी अपील की।